पाठ 18. जूते की कहानी

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि हमें कोई भी निर्णय तुरंत अर्थात् बिना सोचे समझे नहीं लेना चाहिए। साथ ही बच्चों में यह गुण भी विकसित करना है कि हमें केवल अपनी सुख-सुविधाओं के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए बल्कि इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि दूसरों को उससे कष्ट तो नहीं हो रहा है।

पाठ का सारांश

बहुत समय पहले की बात है। एक राजा अपनी प्रजा का हाल जानने निकले। उस समय जूते-चप्पल आदि तो हुआ नहीं करते थे इसलिए राजा नंगे पैर नगर ही यात्रा पर निकले। धूप से जलती धरती और रास्ते के कंकड़-पत्थर से राजा के पैरों को कष्ट होने लगा। परेशान होकर राजा वापस महल लौट आए। राजा ने प्रजा के कष्ट को दूर करने के लिए आदेश दिया कि राज्य की सारी सड़कों को चमड़े से ढक दिया जाए परंतु मंत्री ने सुझाव दिया कि सड़कों को ढकने के स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति के पैरों को ढकने के लिए चमड़े का उपयोग किया जाए तो ज़्यादा लाभकारी होगा। राजा की अनुमति से सबसे पहले राजा के पैर के आकार का चमड़ा काटकर ऊपर-नीचे से जोड़ा गया और इस प्रकार जुड़ने से जूते ने अपना आकार पाया। धीरे-धीरे जूता चलन में आता गया। यदि मंत्री ने राजा की आज्ञा बिना सोचे-समझे मान ली होती तो शायद आज चमड़े के जूतों के स्थान पर चमड़े की सड़कें होतीं।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व पाठ की एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि तैयार करें। बच्चों से पूछें, उन्हें कैसे जूते पहनना पसंद है—चमड़े के या कपड़े के। बच्चों के उत्तर सुनने के बाद उन्हें बताएँ कि किसी भी चीज़ का निर्माण या आविष्कार किसी न किसी विशेष कारण अथवा उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही होता है। फिर उन्हें बताएँ कि आज हम जो पाठ पढ़ने जा रहे हैं, उसमें बताया गया है कि जूते की आवश्यकता क्यों पड़ी तथा जूता कैसे बना।

अब पाठ का आदर्श वाचन करें। प्रत्येक बच्चे को पाठ का एक-एक अंश पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

- पाठ में आए कठिन शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। बच्चों से शब्दों को दोहराने के लिए कहें एवं उन्हें उनके अर्थ भी बताते जाएँ।
- पाठ से मिलने वाली शिक्षा तथा जीवन-मूल्यों पर चर्चा करें।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।